Answers to RHB–DS1/Set–1

1. (*i*) (घ) गलत आदतें उनके जीवन का अंग बन जाती हैं।
(*ii*) (क) अध्ययन में रुचि न होना एवं दूषित शिक्षा प्रणाली।
(*iii*) (ख) अध्ययन में उनकी रुचि नहीं होती है।
(*iv*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(*v*) (ग) अनुशासनहीनता

2. (*i*) (ख) अशिक्षा एवं जानकारी का अभाव होना
(*ii*) (ख) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
(*iii*) (क) जनसंख्या को सीमित करने के लिए जनता को शिक्षित करना होगा।
(*iv*) (ग) उसे भीड़ की संज्ञा दी जाने लगती है।
(*v*) (ख) उन्हें उचित रोजगार नहीं मिल पाता है।

3. (*i*) (क) संज्ञा पदबंध
(*ii*) (ग) छोटी-छोटी
(*iii*) (ख) मैं तुमसे कितनी बार कहूँ कि मेरे सामने धीरे-धीरे बोला करो।
(*iv*) (ख) सर्वनाम पदबंध
(*v*) (ग) क्रिया पदबंध

4. (*i*) (ग) मिश्र वाक्य
(*ii*) (घ) गाँव में आए दिन छोटी-बड़ी घटनाएँ घटती रहती हैं, लेकिन काका के प्रसंग के सामने उनका कोई अस्तित्व नहीं।
(*iii*) (क) गाँव के लोगों को परिवार का निजी मामला होने की बात समझा देते।
(*iv*) (ख) 1–(*i*), 2–(*iii*), 3–(*ii*)
(*v*) (ख) संयुक्त वाक्य

5. (*i*) (घ) कर्मधारय समास
(*ii*) (क) युद्ध में स्थिर है जो
(*iii*) (ग) विष को धारण करने वाले अर्थात 'भगवान शिव' – बहुव्रीहि समास
(*iv*) (घ) आठ आनों का समाहार – द्विगु समास
(*v*) (ग) (*ii*) और (*iii*)

6. (*i*) (क) हिम्मत टूटना
(*ii*) (घ) अंधे के हाथ बटेर लगना
(*iii*) (क) रंग दिखाना
(*iv*) (ख) हवा में उड़ना
(*v*) (ग) दाँतों पसीना आना – बहुत अधिक परेशानी उठाना
(*vi*) (घ) गुस्से में आना

7. (*i*) (ख) दुखों से युक्त
(*ii*) (क) ईश्वर से बिछुड़ना साधक के लिए मृत्यु के समान है।
(*iii*) (ख) आलोचक
(*iv*) (घ) निंदक मनुष्य के व्यक्तित्व में सुधार लाता है।
(*v*) (ख) निंदक स्वभाव को निर्मल कर देता है।

8. (*i*) (ख) परोपकार करना मनुष्यता का धर्म है।

(*ii*) (क) देश पर कुर्बान होने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

9. (*i*) (क) (*i*) और (*ii*)

(*ii*) (ख) खेल-कूद में रुचि होने के कारण

(*iii*) (ख) बड़ों के साथ विनम्रतापूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

(*iv*) (घ) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(*v*) (ख) अवहेलना का

10. (*i*) (क) शैलेंद्र ने पूरी संवेदनशीलता तथा शिद्दत के साथ फ़िल्म बनाई थी।

(*ii*) (ख) (*i*) और (*iv*)

11. (क) 'डायरी का एक पन्ना' पाठ भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के जोश और साहस को दर्शाता है। सारे हिंदुस्तान में जब 26 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस की पहली पुनरावृत्ति मनाई जा रही थी। तब संपूर्ण कलकत्तावासियों की ओर से इसकी तैयारी बहुत बढ़-चढ़ कर की गई। सारे शहर को झंडों से सजाया गया था। क्रांतिकारी नेताओं ने शाम को एक सभा का आयोजन भी किया था। पुलिस इस सभा को रोकने के लिए जोरदार प्रयास कर रही थी। शाम को होने वाली सभा को सुबह से रोकने का प्रयास किया जा रहा था। ब्रिटिश पुलिस कमिश्नर ने भारतीय नेताओं को नोटिस के माध्यम से सूचित कर रोकने का प्रयास किया परंतु स्वतंत्रता सेनानियों ने पुलिस की प्रतिक्रिया के बावजूद इस सभा को सफल बनाने का प्रयास किया। साधारण जनता ने भी इस सभा में बढ़-चढ़कर भाग लिया। पुलिस द्वारा इस कार्यक्रम को रोकने के लिए सभी पर बर्बरतापूर्वक लाठियाँ चलाई गई। इससे भारतीय नागरिकों का जोश और बढ़ गया।

(ख) जापान में चाय पीने की एक विशेष पद्धति है जिसे 'चा-नो-यू' कहते हैं। इस पद्धति की मुख्य विशेषता यही है कि इससे दिमाग की रफ़्तार धीरे-धीरे धीमी होती जाती है जिससे व्यक्ति का मानसिक तनाव खत्म होता है। इस विधि में शांति बनाए रखने के लिए इसमें तीन से अधिक लोगों का प्रवेश करना निषेध है। इसमें सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से की जाती हैं कि मनुष्य का दिमाग अपनी सभी चिंताओं को भूलकर केवल वर्तमान क्षण का ही आनंद उठाने लगता है। वास्तव में मनुष्य को तनावमुक्त रखने के लिए जापान की यह चाय पीने की विधि अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे मनुष्य को मानसिक शांति की अनुभूति होती है जो आज की भागदौड़ भरी जिंदगी के लिए आवश्यक है। इस विधि के परिणामस्वरूप मनुष्य अपने भूत तथा भविष्य की चिंताओं से मुक्त होकर केवल वर्तमान क्षण को ही जीने लगता है।

(ग) शैलेंद्र एक संवेदनशील तथा भावुक व्यक्ति थे। आदर्श उनके जीवन का स्तंभ था। जीवन में सफलता पाने के लिए उन्होंने कभी अपने आदर्शों का त्याग नहीं किया था। आज के फिल्मकारों की तरह उन्हें कभी यश और सम्पत्ति की कामना नहीं थी बल्कि उनके लिए तो आत्म-संतुष्टि ही महत्वपूर्ण थी। 'तीसरी कसम' फ़िल्म को बनाने के लिए तथा इस फ़िल्म के प्रदर्शन के लिए उन्होंने कभी अपनी आत्मा से समझौता नहीं किया। फ़िल्म से लाभ की आशा उन्होंने नहीं की। यह एक कटु सत्य है कि 'तीसरी कसम' एक बेहतरीन फ़िल्म होने के बावजूद चल नहीं सकी। इसी कारण से शैलेंद्र को फ़िल्म निर्माता बनने के लिए अयोग्य कहा गया है क्योंकि फ़िल्म से लाभ कमाने के लिए शैलेंद्र ने अपनी आदमीयत नहीं खोई थी। उनका स्तर लाभ-हानि, सफलता-असफलता के स्तर से अधिक ऊँचा था।

12. (क) उदार व्यक्ति में परोपकार की भावना निहित होती है। उसमें स्वार्थ की भावना नहीं होती है। उदार तथा परोपकारी व्यक्ति अपने स्वार्थ के विषय में न सोचकर पहले दूसरों के लाभ के विषय में सोचता है। एक उदार व्यक्ति समस्त संसार को सदैव अपना मानता है तथा निस्वार्थ भाव से सभी के लिए बिना किसी भेदभाव के कार्यरत रहता है। उदार व्यक्ति वह नहीं जिसके भीतर केवल अपने और अपनों के लिए कल्याणकारी भावना हो बल्कि जिनके लिए स्वयं के हित चिंतन से अधिक सर्वोपरि दूसरों का हित चिंतन हो सच्चे अर्थों में वही महान एवं उदार व्यक्ति है। ऐसे लोग मृत्यु के बाद भी युगों-युगों तक याद किए जाते हैं। समाज की उन्नति में उदार तथा महापुरुषों का प्रमुख योगदान रहा है। समाज में परोपकार की भावना तथा शाश्वत मूल्य इन्हीं पुरुषों की देन है।

(ख) कैफ़ी आज़मी द्वारा रचित कविता 'कर चले हम फ़िदा' सैनिकों के मन में व्याप्त देशभक्ति की भावना उजागर करती है। जिंदगी प्रत्येक प्राणी को प्रिय होती है। घोर से घोर कष्ट में भी मनुष्य में जीवित रहने की इच्छा बनी रहती है। कोई भी मनुष्य जीवन को खोना नहीं चाहता है। परंतु इसके ठीक विपरीत देश की सीमा पर तैनात सैनिक अपने देश तथा देशवासियों की सुरक्षा के लिए मर मिटने को हर पल तैयार रहता है। यह जानते हुए भी कि उसका जीवन औरों के जीवन को बचाने के लिए है, उसके मन से बलिदान तथा देशभक्ति की भावना कम नहीं होती है। मृत्यु के समय में भी उसके मन में यही भाव रहता है कि उसके बाद देश को किसी सुरक्षित हाथों के हवाले कर दिया जाए। देश तथा देशवासियों के लिए सैनिकों का यह बलिदान अविस्मरणीय है। देश को ऐसे वीर जवानों पर गर्व है जिनके बलिदान की नींव पर यह देश खड़ा है। सैनिक अपने देश की सुरक्षा के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन तथा सुखों का त्याग करते हैं। उन्हें यही आशा होती है कि उनके इस बलिदान से एक आदर्श देश का निर्माण होगा।

(ग) सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' वर्षा ऋतु में पर्वतीय क्षेत्रों के सौंदर्य को दर्शाती है। वर्षा ऋतु के समय पर्वतों पर बादलों के छा जाने से वातावरण अत्यंत मनमोहक प्रतीत होता है। वर्षा के प्रभाव से पर्वतों पर खिले पुष्प उनके नेत्रों के समान प्रतीत होते हैं। पर्वतों के नीचे के भाग में स्थित तालाब वर्षा के जल से पूरी तरह भर गए हैं। इस तालाब रूपी दर्पण में पर्वत अपने विस्तृत स्वरूप को देख रहे हैं। पर्वतों पर छाए बादल वातावरण को रहस्यमयी बना रहे हैं। केवल झरनों का स्वर ही सुनाई देता है, पर्वत मानो बादल रूपी पंख लगाकर उड़ गए हो। इस रहस्यमयी वातावरण को देखकर पर्वतों पर स्थित शाल के वृक्ष भयभीत हो गए हैं। बादलों के छा जाने से तालाबों में उठती भाप ऐसी प्रतीत होती है, मानो तालाब में आग लग गई है और उनमें से धुआँ उठ रहा है। इस दृश्य को देखकर ऐसा लगता है, मानो अचानक ही पर्वत बादल रूपी यान में परों को फड़फड़ाते हुए उड़ गए हों, जैसे इंद्र ही कोई इंद्रजाल फैला रहे हों।

13. (क) ठाकुरबारी के साथ गाँव के लोगों का विश्वास जुड़ा हुआ था। गाँव के लोगों के मन में ठाकुरबारी के प्रति अगाध श्रद्धा के भाव थे। वे अपने अच्छे-बुरे प्रत्येक कार्य का उत्तरदायी ठाकुरबारी को ही मानते थे।

लोग ठाकुरबारी से मन्नत माँगते कि पुत्र हो, मुकदमे में जीत हो, उनके बच्चों की शादी अच्छे घर में हो और जब उनकी मन्नत पूरी हो जाती थी तो वह ठाकुर जी पर रुपए, जेवर, अनाज आदि चढ़ाते थे। अधिक खुश होने पर अपने खेत का छोटा टुकड़ा तक ठाकुर जी के नाम पर लिख देते थे। गाँववालों के साथ यदि कुछ अच्छा होता था तो वे खुश होकर चढ़ावा चढ़ाते थे। यदि कुछ बुरा होता था तो वे भयभीत होकर मन्नत माँगते थे।

(ख) लेखक गुरदयाल सिंह जी तथा उनके मित्रों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। स्कूल की कठिन पढ़ाई तथा शिक्षकों द्वारा मार-पीट कर अनुशासन में रखा जाना बच्चों के लिए भयानक स्थिति थी। कुछ विषयों की पढ़ाई तो उन्हें नीरस प्रतीत होती थी। इन सबके कारण स्कूल तथा पढ़ाई के प्रति उनके मन में एक प्रकार का भय बैठ गया था। इन सबके बावजूद कई ऐसी स्थितियाँ भी थीं। जिनके कारण उन्हें स्कूल जाना अच्छा भी लगने लगा था। ऐसा विशेषकर तब होता था जब उनके पीटी सर पढ़ाई के स्थान पर बच्चों को स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे। जब लड़कों के हाथ में नीली-झंडियाँ पकड़ा देते थे तथा वन-टू-थ्री करके झंडियों को ऊपर-नीचे करवाते थे तब हवा में लहराती यह झंडियाँ बच्चों को बड़ी अच्छी लगती थी। स्काउट की वर्दी पहनकर सभी बच्चों को सेना के जवान होने की अनुभूति होती थी। इन्हीं सब कारणों से बच्चों को स्कूल जाना अच्छा लगता था। हमें जब पाठेतर सक्रियता में भाग लेने का मौका मिलता है तथा स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है तब हमें भी स्कूल जाना अच्छा लगता है।

(ग) टोपी को अपनी दादी से नफरत थी। उसे उसके घर में समझने वाला कोई नहीं था। सभी उसके बालमन को आहत कर उसे भला बुरा कहते थे। उसकी अपनी दादी ने तो हमेशा उसके व्यक्तित्व में कमियाँ ही निकाली। ऐसे में उसकी मुलाकात इफ़्फ़न और उसकी दादी से हुई तो उसे बहुत ही अपनापन लगा। दोनों एक दूसरे की भावनाओं को समझते थे। इफ़्फ़न की दादी टोपी की तरह ही पूर्वी बोली बोलती थी। उसकी अपनी दादी ने तो हमेशा उसकी बोली का मजाक ही उड़ाया था। टोपी की

दादी उर्दू बोलती थी। इसीलिए उसने दादी बदलने की बात की थी। इससे उसकी भोली-भाली मानसिकता झलकती है जो इस दुनिया के जटिल रीति-रिवाज को समझ पाने में असमर्थ है। इफ़्फ़न टोपी का इकलौता मित्र था। वह उसकी भावनाओं को ही नहीं बल्कि दुनियादारी को भी समझता था। अतः उसने दादी पर केवल उसका अधिकार न होने की बात कहकर टोपी के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उसे अपनी दादी से सबसे अधिक प्रेम था। वह उनके बदले किसी और को स्वीकार नहीं कर सकता था। अतः इसी कारण इफ़्फ़न ने दादी को बदलने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

14. (क) **स्वच्छंदता**

स्वच्छंदता का अर्थ है– 'जब जिस समय, जिस स्थान पर, जिस काम को करने की इच्छा हो, उसे निःसंकोच करना। स्वच्छंद आचरण की भावना मनुष्य में तब विकसित होती है, जब वह स्वार्थी हो जाता है और उसमें अहम की भावना आ जाती है। स्वतंत्रता हमेशा नियमों के अधीन होती है, जबकि स्वच्छंदता नियम रहित होती है। इसीलिए किसी भी स्वच्छ समाज के लिए स्वच्छंदता अधिक घातक है। इन सबका मुख्य कारण है– नैतिक शिक्षा का अभाव। पहले घर में तथा विद्यालयों में यह सिखाया जाता था कि क्या सही है और क्या गलत है। परंतु अब स्थिति बदल गई है। अब लोग स्वतंत्रता पाने की इच्छा में इतने उन्मत्त हो चुके हैं कि सही और गलत का भेद भूल चुके हैं। अब लोगों के सोच-विचार, आचार-व्यवहार आदि में नैतिकता दिखाई नहीं देती है। जीवन के मूल्य बदलते जा रहे हैं। जब तक घरों तथा विद्यालयों में नैतिक शिक्षा पर बल नहीं दिया जाएगा तब तक लोगों की सोच तथा व्यवहार में बदलाव नही होगा।

(ख) **सत्यमेव जयते**

संसार में सत्य के समान बड़ा और कोई तप नहीं है। यदि कोई व्यक्ति सत्यनिष्ठ होकर अपना जीवन-यापन करता है तो उसे किसी भी तरह के व्रत, नियम, पूजा, उपवास, तीर्थ आदि की आवश्यकता नहीं है। राजा हरिश्चंद्र, युधिष्ठिर आदि सत्यवादियों के उदाहरण आज भी दिए जाते हैं और हमेशा दिए जाते रहेंगे। सत्य शाश्वत है जो कभी नष्ट नहीं हो सकता। जो नियम सृष्टिकर्ता ईश्वर द्वारा बनाए गए हैं, वे सत्य हैं, दृढ़ हैं, अनश्वर हैं और किसी भी स्थिति में किसी के द्वारा बदले जाने या नष्ट किए जाने योग्य नहीं हैं। सत्यमार्ग पर चलने वालों के जीवन में अधिकतर भौतिक सुख-साधनों का अभाव दिखाई देता है, जीवन संघर्षमय होता है तथा प्रगति की गति मंद होती है। उनकी सामाजिक छवि बनने में काफी समय लग जाता है। उन्हें पथभ्रष्ट करने की कोशिश भी की जाती है। उनके चारों ओर षडयंत्रों का कुचक्र चलाया जाता है। यह बात सच है कि सत्य बोलने वाले लोगों का जीवन संघर्षभरा होता है। परंतु अंतिम विजय सत्य की ही होती है इसमें कोई संदेह नहीं है। सत्यवादी की आत्मा सुखी, संतुष्ट, प्रसन्न तथा निडर रहती है।

(ग) **जननी और मातृभूमि का महत्व**

जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। जन्म देने वाली माँ जननी कहलाती है। जिस प्रकार परिश्रम एवं स्नेह से एक माता अपनी संतान का पालन करती है, उसे अच्छी शिक्षा व संस्कार देती है, समाज में रहने योग्य बनाती हैं, वैसा अन्य कोई नहीं कर सकता है। संतान का सुख ही उसके लिए सर्वोपरि होता है। माता के इस उपकार का ऋण उसकी संतान आजीवन नहीं चुका सकती। जिस प्रकार व्यक्ति अपनी माता के ऋण को नहीं चुका सकता है, उसी प्रकार हम जन्मभूमि के ऋण को भी नहीं चुका सकते हैं। इस जन्मभूमि के हम पर अनेक उपकार हैं। हम इसकी ममतामयी गोद में खेलकर बड़े हुए हैं। हमारा शरीर इसके उगाए हुए अन्न, फल, मेवे आदि खाकर पुष्ट होता है तथा इस पर बहने वाली नदियों के अमृतमय जल का हम सेवन करते हैं। यह ऐसी ममतामयी माँ है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक, सभी को बिना किसी भेदभाव के आश्रय देती है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी मातृभूमि की सेवा तन-मन धन से करें।

15. (क) सेवा में

महानिदेशक

दूरदर्शन विभाग

दिल्ली

दिनांक : 24 मई, 20xx

विषय : दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों के संबंध में।

महोदय,

मेरा नाम विवेक सिंह है। मैं आपका ध्यान दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले वांछित और अवांछित कार्यक्रमों की ओर दिलाना चाहता हूँ। निःसंदेह दूरदर्शन पर कुछ कार्यक्रम बहुत अच्छे दिखाए जाते हैं। वे छोटे-बड़े सभी के लिए होते हैं, जैसे—हर घंटे समाचार सुनाना, देश-विदेश की खबरें देना, कृषि क्षेत्र से लेकर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक की प्रमुख घटनाओं की आँखों देखी जानकारी देना आदि। आपका यह प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है। दूसरी ओर, आपके कुछ ऐसे कार्यक्रम भी हैं, जो दर्शकों विशेषकर छोटे बच्चों और विद्यार्थियों के मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव डालते हैं, उनमें अति शीघ्र सुधार की आवश्यकता है। आजकल कुछ धारावाहिक ऐसे दिखाए जाते हैं, जिनकी कहानी देखकर, उनके पात्रों की वेश-भूषा, व्यवहार आदि देखकर यह नहीं लगता कि हम भारतीय परिवारों, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर आधारित धारावाहिक देख रहे हैं। आधुनिक कहे जाने वाले नाटकों के पात्रों की वेशभूषा और चरित्र को देखकर भ्रांति होने लगती है कि कहीं हम विदेश में तो नहीं हैं।

अतः ऐसे कार्यक्रमों में सुधार की आवश्यकता है जिनका गलत प्रभाव हमारी संस्कृति पर पड़ रहा है। कार्यक्रम ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को यथार्थ जीवन से परिचित कराएँ। इतिहास तथा अन्य शैक्षणिक विषयों की ओर अधिक जानकारी दी जानी चाहिए। आशा है, आप मेरे सुझावों पर अवश्य ध्यान देंगे और शीघ्रातिशीघ्र सुधार की दिशा में आवश्यक कदम भी उठाएँगे।

धन्यवाद

भवदीय

विवेक सिंह

दिल्ली

अथवा

(ख) सेवा में

क्षेत्रीय विद्युत अधिकारी

य०र०ल० नगर

दिनांक : 24 मई, 20xx

विषय : क्षेत्र में प्रकाश व्यवस्था के सुधार के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं य०र०ल० नगर का निवासी हूँ। लगभग दो महीने से मेरे क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट नहीं जल रही है। कुछ ट्यूब्स खराब हैं तथा कुछ गायब हैं। रात में बहुत अंधकार रहता है। इससे दुर्घटनाओं तथा चोरियों का भय भी रहता है। कुछ दिनों पहले रात्रि के लगभग ग्यारह बजे एक आदमी अपने दफ्तर से घर वापस आ रहा था। अंधकार की वजह से वह अपने मोबाइल की लाइट जलाकर रास्ता देखने का प्रयास कर रहा था। इतने में ही पीछे से बाइक पर आ रहा अज्ञात व्यक्ति फोन

छीनकर भाग गया। इस प्रकार की अप्रिय घटनाएँ कुछ दिनों से लगातार घट रही हैं। पहले भी इस विषय में एक प्रार्थना पत्र दिया जा चुका है, परंतु कोई कार्यवाही नहीं हुई।

अब यह दूसरा प्रार्थना पत्र दिया जा रहा है। आशा है कि आप इस पर अवश्य ध्यान देंगे और शीघ्र ही हमारी समस्या का समाधान करेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

सिद्धार्थ गोयल

16. (क)

अ०ब०स० स्कूल, य०र०ल० नगर

सूचना

सरस्वती पूजा का अयोजन

दिनांक : 27 दिसंबर, 20XX

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि अगले महीने हमारे विद्यालय में सरस्वती पूजा का आयोजन किया जा रहा है। अतः आप सभी विद्यार्थियों को सरस्वती पूजा के इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित किया जा रहा है। आप सभी अवश्य उपस्थित हों।

कार्यक्रम से संबंधित जानकारी इस प्रकार है–

दिनांक – 24 जनवरी

समय – प्रातः 7 बजे

प्रसाद वितरण – प्रातः 10 बजे

सचिव

विजय मोहन शर्मा

अथवा

(ख)

संस्कृति क्लब, य०र०ल० नगर

सूचना

नए वृद्धाश्रम के संबंध में

दिनांक : 24 मई, 20XX

आप सभी निवासियों को यह सूचित किया जाता है कि आपके मोहल्ले में एक वृद्धाश्रम खोला जा रहा है ताकि असहाय वृद्धों की उचित सेवा तथा देख-रेख की जा सके। अतः आप सभी से यह अनुरोध है कि यथासंभव आर्थिक सहायता प्रदान कर इस योजना को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

आप सभी संस्कृति क्लब के सचिव को यथासंभव धनराशि देकर सहायता प्रदान कर सकते हैं।

सचिव

सुरेश यादव

17. (क)

आओ मिलकर पर्यावरण को बचाएँ, जीवन को स्वस्थ बनाएँ।

स्वस्थ जीवन का यही आधार।
स्वच्छ हो पर्यावरण और स्वच्छ विचार॥
स्वस्थ शरीर, तो जीवन सुखमय,
खुशहाली और तन-मन पुलकित॥

विकास की दौड़ में भागते-भागते हमने अपने ही जीवन के कवच रूपी पर्यावरण को छिन्न-भिन्न कर डाला है। जागो! अभी भी समय है, जीवन को स्वस्थ और सुखमय बनाना है, तो जल, वायु और मिट्टी को अपने वास्तविक स्वरूप में रहने दें। इस दिशा में विचार करो और आवश्यक कदम उठाओ।

पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जनहित में जारी

अथवा

(ख)

सरस्वती विद्या मंदिर, हरिद्वार द्वारा

प्रदर्शनी का आयोजन

हस्तनिर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी
आत्मनिर्भर बनाएँ जीवन अपना

हस्त-शिल्प है कला हमारी,
खुशियाँ दे जीवन की सारी।

दिनांक – 10 जून, 20XX
समय – सुबह 11:00 बजे से रात 8:00 बजे तक
स्थान – विद्यालय सभागार

पता–बड़ा बाज़ार, गली नं. 2, हरिद्वार **संपर्क**– 8734xxxxxx

18. (क) **'समय का महत्व'**

राहुल अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। वह रोज़ सुबह देर से उठता था और प्रतिदिन देर से विद्यालय पहुँचता था। इसके कारण उसके शिक्षक उसे डाँटते भी थे परंतु उस पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। एक दिन विद्यालय की ओर से उसकी कक्षा के सभी विद्यार्थियों को पिकनिक पर ले जाने की योजना बनाई गई। इसके लिए एक विशेष दिन भी निश्चित कर लिया गया। राहुल भी अपने मित्रों के साथ पिकनिक पर जाने के लिए उत्साहित था। धीरे-धीरे पिकनिक पर जाने का दिन पास आने लगा। सभी विद्यार्थी निर्धारित दिन पर तथा निश्चित समय पर पहुँच गए थे। केवल राहुल नहीं आया था क्योंकि उसे हर जगह देर से पहुँचने की आदत थी। उस दिन भी उसकी प्रतीक्षा करते-करते सभी लोग पिकनिक के लिए निकल गए। देर से पहुँचने के बाद उसे अपनी आदत पर बड़ा पछतावा हुआ। मन ही मन वह बहुत उदास था। उसने यह निर्णय लिया कि अब वह हमेशा समय पर उठेगा तथा समय पर विद्यालय पहुँचेगा। अब उसे समय का महत्व समझ में आ चुका था।
शिक्षा–इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हमें समय का महत्व समझते हुए सदैव समय का पाबंद रहना चाहिए।

अथवा

(ख) प्रेषक – abc@gmail.com

प्राप्तकर्ता – bcd@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) – xyz@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) – qrs@gmail.com

विषय – नए ए०सी० को बदलने के संबंध में।

महोदय,

सविनय आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि पिछले सप्ताह 20 मई, 20xx को आपकी कंपनी से एक नया ए.सी. खरीदा था। जिसकी रसीद संख्या-54678 है। दो दिन तो यह ठीक चला परंतु तीसरे दिन से यह ढंग से काम नहीं कर रहा है। अधिक गर्मी के कारण सभी को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गर्मी में बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं। बुजुर्ग भी ढंग से आराम नहीं कर पा रहे। आपसे विनती है कि आप इस ए.सी. को बदलकर नया ए.सी. भेजें।

आशा है आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर जल्द ही मेरा ए०सी० बदल देंगे।

धन्यवाद सहित

भवदीय

क०ख०ग०